ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-8* September- 2021
Innovation The Research Concept

पुराणों में तीर्थ परम्पराः कूर्म पुराण के विशेष सन्दर्भ में

The Pilgrimage Tradition in the Puranas: With Special Reference to the Kurma Purana

Paper Submission: 05/09/2021, Date of Acceptance: 22/09/2021, Date of Publication: 23/09//2021

रागिनी राय
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
ईश्वर शरण पी0जी0कॉलेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उ0प्र0, भारत

सारांश

भारतीय संस्कृति के अध्ययन के लिए पुराण बहुत महत्वपूर्ण हैं । पुराण संस्कृत साहित्य के महत्वपूर्ण अंग स्वीकार किये गये हैं । मुख्य पुराणों की संख्या अठारह मानी गई है, इनमें कूर्म पुराण का विशेष महत्व होते हुए भी प्रायः उपेक्षित रहा है । सामान्यतः कूर्मपुराण की तिथि 550 ई० मानी जाती है । पुराणो में तीर्थों का विशेष महत्व स्थापित किया गया है । कूर्मपुराण में भी अनेक तीर्थों के उल्लेख प्राप्त होते हैं जैसे-काशी, प्रयाग और नर्मदा आदि । इन तीर्थों के साथ उनसे अर्जित पुण्य का भी उल्लेख प्राप्त होता है । इन तीर्थों के माध्यम से व्यक्ति में उच्च नैतिक गुण, आत्मसंयम आदि के विकसित होने की भी अपेक्षा की गई है। इस प्रकार मैने कूर्मपुराण के विशेष संदर्भ में उल्लिखित तीर्थ परम्परा का अध्ययन करने का प्रयास किया है।

Puranas are very important for the study of Indian culture. Puranas have been accepted as an important part of Sanskrit literature. The number of the main Puranas is considered to be eighteen, in spite of the special importance of Kurma Purana, it has often been neglected. Generally the date of Kurma Purana is considered to be 550 AD. Special importance of pilgrimages has been established in the Puranas. Mention of many pilgrimages are also found in Kurma Purana such as Kashi, Prayag and Narmada etc. Along with these pilgrimages, the mention of the merit earned from them is also received. It is also expected to develop high moral qualities, self-restraint etc. in the person through these pilgrimages. Thus I have tried to study the pilgrimage tradition mentioned with special reference to the Kurma Purana.

मुख्य शब्दः पुराण, तीर्थ, यात्रा, दान-पुण्य, व्रत,आत्मसंयम, प्रयाग
Purana, Pilgrimage, Journey, Charity, Fasting, Self-restraint, Prayag

प्रस्तावना

वेदार्थ परम्परा ही पुराणों का मूल बीज है। इनका प्रमुख लक्ष्य वेदों में निहित विद्या का उपबृहंण कर उसे जनसामान्य तक पहुँचाना था। वेदों की ऋचाओं में पुराण शब्द मिलता है किन्तु वहाँ एकमात्र प्राचीनता का ही बोधक है। यास्क पुराणों की परिभाषा इस प्रकार करते हैंः "पुरा नवं भवति" अर्थात् जो प्राचीन होकर भी नया होता है। अस्तु पुराणों का मौलिक रूप से सम्बन्ध प्राचीनता से रहा है। पुराण साहित्य को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है- महापुराण तथा उपमहापुराण। महापुराणों की संख्या 18 बतायी गयी है।

अध्ययन का उद्देश्य

इन विविध पुराणों के मध्य कूर्म पुराण का विशेष महत्त्व है; किन्तु अन्य पुराणों की तुलना में विद्वानों द्वारा प्रायः उपेक्षित ही रहा है। कूर्म पुराण में श्राद्ध, अशौच, प्रायश्चित, दान, तीर्थ आदि विषयों पर विस्तृत विवरण मिलते हैं। कूर्म पुराण में वर्णित विविध तीर्थ भौगोलिक सामग्री को भी उपलब्ध कराते हैं। इन तत्वों का उद्घाटन करना ही हमारा उद्देश्य है। हाजरा ने कूर्म पुराण का समय 550 ई0 माना है। यह मूलतः वैष्णव होते हुए भी शैव वाशुपतों एवं शाक्त प्रभाव को भी द्योतित करता है।

वाराणसी माहात्म्य

अन्य कई पुराणों के समान कूर्म पुराण में वाराणसी (काशी) की विशद् प्रशस्ति गायी गयी है।[7] इसके प्रारम्भ में ही शिवजी द्वारा स्वयं कहा गया है कि वह "मेरी वाराणसी पुरी अत्यन्त गुह्य क्षेत्र है। यह सभी प्राणियों को संसार सागर से तारने वाली है।[8] कूर्मपुराणान्तर्गत एक आख्यान में कण्ड ऋषि राजा को कहते हैं-- "तुम वाराणसी जाओ, जहाँ संसार को मुक्ति देने वाले महेश्वर, विश्वेश्वर लिङ्रूप में गंगा के तट पर विराजमान है।[9] वाराणसी को सभी तीर्थों में उत्तम, सभी स्थानों में श्रेष्ठ एवं सभी ज्ञान में उत्तम ज्ञान कहा गया है।[10] शताब्दियों से काशी के पाँच नाम रहे हैं-वाराणसी, काशी, अविमुक्त आनन्द-कानन, श्मशान या महाश्मशान।[11] इनमें से काशी, वाराणसी, अविमुक्त एवं श्मशान[12] आदि नामों का प्रयोग कूर्म पुराण में भी किया गया है।स्कन्द पुराण के काशीखण्ड में इसे सर्वप्रथम आनन्द कानन तदुपरान्त अविमुक्त कहा गया है।[13]

कूर्म पुराण के अनुसार वाराणसी में किया हुआ सभी प्रकार का दान, जप, होम, यज्ञ, तप, कर्म, ध्यान, अध्ययन एवं ज्ञान अक्षय होता है।[14] ज्ञानियों का कहना है कि विशिष्ट पापों से युक्त शरीर वाले घृणा योग्य हैं।[15] मत्स्य पुराण में कहा गया है कि अविमुक्त क्षेत्र में कैवल्य की प्राप्ति होती है, जिसे देवताओं के लिये भी दुष्कर माना गया है।[6]

कूर्मपुराण वाराणसी के माहात्म्य ज्ञान में अन्य प्रसिद्ध तीर्थों से तुलना करते हुए कहता है--"जिस प्रकार से वाराणसी में मरने वालों को परम मोक्ष प्राप्त होता है, वैसा अन्यत्र नहीं प्राप्त होता है।[17] इसी प्रकार गंगा श्राद्ध, दान, तप एवं व्रत अन्यत्र सुलभ है, किन्तु वाराणसी में ये सभी अत्यन्त दुर्लभ हैं।[18] धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से तीर्थों का विशेष

स्थान था। यथा सभी वर्णों को तीर्थों को समान रूप से जानने का अधिकार था। अर्थात् छुआ-छूत और जातिवाद का कोई दुष्प्रभाव तीर्थों पर नहीं था। तीर्थों के प्रभाव की स्थापना के लिये कुछ बातें अतिश्योक्ति पूर्ण कही गई हैं, यथा सभी पापियों को यहाँ मरने पर स्वर्ग प्राप्त होना, या सहस्त्रों जन्मों में पूर्व संचित पापों का मात्र वाराणसी में प्रवेश से नष्ट हो जाना आदि। वाराणसी की महत्ता का प्रतिपादन इस रूप में महाभारत में भी मिलता है, जहाँ कहा गया है कि इस क्षेत्र का दर्शनमात्र ब्रह्महत्या का निवारक होता है।[19]

प्रयाग

प्रयाग क्षेत्र का परिचय कूर्म पुराण इस प्रकार देता है, यह तीनों लोकों में प्रसिद्ध 'प्रजापतिक्षेत्र' है। यहाँ पर स्नान करने वाले स्वर्ग जाते हैं एवं जो यहाँ मरते हैं, वे पुनर्जन्म नहीं पाते।[20] गंगा-यमुना के संगम पर स्थित इस तीर्थ का स्नान एवं प्राणत्याग की दृष्टि से भी विशेष महत्व था।[21] मत्स्य पुराण के अनुसार किसी रोग से अक्रान्त, मनुष्य दीन अथवा वृद्ध हो, गंगा-यमुना के संगम पर प्राण त्याग करने से स्वर्गलोक को प्राप्त होता है। इसी प्रकार मत्स्य पुराण में प्रयाग तीर्थ के विषय में वर्णित है कि वहाँ जाने पर पग-पग पर अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है।[22] कूर्म पुराण के अनुसार, जो व्यक्ति प्रयाग में कपिल अथवा पाटल वर्ण की स्वर्गगठित श्रृंगों, चाँदी से मढ़े खुरों एवं वस्त्राच्छादित कण्ठ वाली दुधारू धेनु का दान करता है, वह रूद्रलोक में उतने सहस्त्र वर्षों तक पूजित होता है, जितने रोम उस गाय के शरीर में होते हैं।[23] कहा गया है कि तीर्थ एवम् पवित्र मन्दिरों में दान नहीं लेना चाहिए।[24] जो व्यक्ति स्वकार्य, पितृकार्य या देवता की पूजा के समय गंगा और यमुना के मध्य ग्राम स्वर्ण मुक्ता या अन्य कोई पदार्थ दानस्वरूप ग्रहण करता है, उसके तीर्थ का पुण्य उस समय तक निष्फल रहता है, जब तक वह उस पदार्थ का भोग करता रहता है।[25]

कूर्म पुराण ने "तीर्थयात्रा विधि" से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों का उल्लेख प्रयाग माहात्म्य के सन्दर्भ में किया है।[26] तीर्थयात्रा में सवारी का त्याग करना चाहिए।[27] जो मनुष्य ऐश्वर्य, लोभ या मोहवश सवारी द्वारा तीर्थानुसरण करता है, उसका फल उसे प्राप्त नहीं होता।[28] प्रयाग तीर्थ में बैल पर आरूढ़ होकर जाने वाला व्यक्ति दस सहस्त्र कल्प तक घोर नरक में वास करता है।[29] उस मनुष्य के पितृगण उसका जल ग्रहण नहीं करते।[30] पद्मपुराण के अनुसार वृषभ वाहन का उपयोग करने वाले को गोवध का पाप लगता है।[31] विष्णुधर्मोत्तर में इस सम्बन्ध में अधिक व्यवहारिक विचार प्राप्त होते हैं, पैदल तीर्थयात्रा करने से सर्वोच्च तप का फल मिलता है, यदि सवारी से यात्रा की जाती है तो केवल स्नान का फल मिलता है।[32]

प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम पर आर्ष विवाह विधि से कन्या का दान करने पर कहा गया है कि वह व्यक्ति घोर नरक के साक्षात्कार से बच जाता । विष्णु पुराण में इसी प्रकार गया में गौरी कन्या का विवाह पितरों की प्रसन्नता का कारण बताया गया है।[33] स्पष्ट है कि ऐसे पवित्र स्थलों पर विवाह आदि महत्वपूर्ण संस्कारों को सम्पन्न करने का विशेष महत्व था। गंगा-यमुना के संगम पर कठोर व्रत धारण कर स्नान करने का भी विशिष्ट फल राजसूय एवं अवश्मेघ यज्ञों के तुल्य बताया गया है।[34] इस प्रकार के उल्लेख यज्ञ-यागों के महत्त्व को कम करते हुए सरल विधि से अर्थात् तीर्थयात्रा द्वारा उन पुण्यों को प्राप्त करने का मार्ग सुझाते हैं।

कूर्म पुराण में प्रयाग क्षेत्र के अन्तर्गत अन्य उप तीर्थों का माहात्म्य वर्णित किया गया है।[35] अन्ततः कहा गया है कि विद्वानों का मत है कि प्रयाग में दस सहस्त्र (मुख्य) तीर्थ एवं तीस करोड़ अन्य (अप्रधान) तीर्थ अवस्थित है।[36]

नर्मदा

गंगा के समान नर्मदा को भी पुनीत नदियों में स्थान प्राप्त है। मध्य प्रदेश की यह गंगा ही है। कूर्मपुराण, मत्स्य आदि अनेक पुराणों की भाँति नर्मदा एवं इसके तट पर स्थित शिव लिंगों की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए इस क्षेत्र से सम्बन्धित अन्य पवित्र स्थलों (तीर्थों) का भी वर्णन करता है।[37]

कूर्मपुराण के अनुसार रूद्र के शरीर से निकली नर्मदा सभी प्राणियों को मुक्ति देने वाली है।[38] यह पवित्र देवी स्वरूपा नर्मदा लोक में प्रसिद्ध सभी नदी, तीर्थों में श्रेष्ठ है।[39] आगे वर्णित है कि गंगा कनखल में पवित्र है, सरस्वती कुरूक्षेत्र में पवित्र है, किन्तु नर्मदा चाहे ग्राम हो या अरण्य समस्त स्थानों पर पवित्र है।[40] नर्मदा का जल दर्शन मात्र से ही पवित्र करने वाला बताया गया है। मत्स्य एवम् पद्म पुराणों में भी नर्मदा के लिये ऐसे ही उद्घोष प्राप्त होते हैं।[41] विष्णु धर्मसूत्र ने श्राद्ध योग्य तीर्थों की सूची दी है, जिसमें नर्मदा के सभी स्थलों को श्राद्ध के योग्य ठहराया है।[42] विष्णुपुराण में कहा गया है कि यदि कोई रात एवं दिन में और जब अन्धकार पूर्ण स्थान में उसे जाना हो, तब प्रातःकाल नर्मदा को नमस्कार, रात्रि को नमस्कार (हे नर्मदा, तुम्हें नमस्कार, मुझे विषधर सांपों से बचाओ) इस मन्त्र का जाप करके चलता है, तो उसे सांपों का भय नहीं होता।[43] गुप्तकाल का एरण प्रस्तर स्तम्भाभिलेख (गुप्त सं0 165, 484-85 ई0) भी नर्मदा की चर्चा करता है।[44] कूर्मपुराण नर्मदाक्षेत्र के अन्य अनेक तीर्थों का भी उल्लेख करता है।[45]

तीर्थाधिकारी

कूर्मपुराण का कथन है कि प्रायश्चित्ती, विधुर, पापाचारी एवं गृहस्थ तथा अन्य इसी प्रकार के पुरूषों को तीर्थों का सेवन करना चाहिए।[46] पत्नी अथवा अग्नि के साथ तीर्थ का सेवन करने वाला व्यक्ति सभी पापों से मुक्त होकर यथोक्त गति का अधिकारी बताया गया है।[47] इसके साथ ही तीर्थार्थी को त्रिगुणें से मुक्त होने के उपरान्त पुत्रों की जीविका का विधान कर एवं उन्हें अपनी पत्नी का भरण-पोषण का उत्तरदायित्व सौंप कर तीर्थ की यात्रा करनी चाहिए।[48] ब्रह्मपुराण में तीर्थयात्रा के इच्छुक व्यक्ति के लिये व्यवस्था है कि उसे एक दिन पूर्व से ब्रह्मचर्य धारण करना तथा उपवास करना चाहिए, दूसरे दिन उसे गणेश, देवों, पितरों की पूजा और अपनी सामर्थ्य के अनुसार अच्छे ब्राह्मणों का सम्मान करना चाहिए तथा तीर्थ यात्रा से लौटने पर भी वैसा ही करना चाहिए।[49] इसी प्रकार अन्य पुराणों में भी तीर्थ-यात्री के लिये विधि-विधानों का उल्लेख यत्र-तत्र प्राप्त होता है।

तीर्थ एवं श्राद्ध उपवास

कूर्मपुराण के अनुसार नदी-तीर्थ, तीर्थ, अपनी भूमि, पर्वत के शिखर एवं एकान्त स्थानों पर श्राद्ध करने से पितृगण सदा सन्तुष्ट रहते हैं।[50] तीर्थों में गंगा, प्रयाग एवं अमरकण्टक (नर्मदा) में किया गया श्राद्ध अक्षय फल प्रदान करने वाला कहा गया है।[51] वायु एवं ब्रह्माण्ड पुराणों के अनुसार अमरकण्टक पर किया गया श्राद्ध पितरों को संतर्पण प्रदान करता है।[52] यदि मनुष्य किसी भी प्रसंगवश गया जाकर श्राद्ध करे तो वह पितरों को तार देगा एवम् परमगति प्राप्त करेगा।[53] वायु पुराण भी गया में आचरित श्राद्ध को मोक्षदायक घोषित करता है। कूर्म पुराण के अनुसार वराह पर्वत, विशेष रूप से गंगा, वाराणसी, गंगद्वार, प्रभास, बिल्वक, नीलपर्वत, कुरूक्षेत्र कुब्याम्र, वाराणसी, गंगद्वार नैमिषारण्य, पुष्कर क्षेत्र, नर्मदातीर, कुशवंत, श्रीशैल, भद्रकर्णक, वेत्रवती, विपाशा, विशेषतः गोदावारी आदि नदियों के तट पर श्राद्ध करने से पितृगण सदैव प्रसन्न करते हैं।[54] वायु, ब्रह्माण्ड आदि पुराणों का मत है कि कालंजन, दशार्ण, नैमिष, कुरूजांगल तथा वाराणसी में सक्रिय होकर श्राद्ध करना चाहिए।[55] कूर्मपुराण का कथन है कि तीर्थ[56] एवं श्राद्ध[57] से ही उत्तम फल की प्राप्ति होती है। तीर्थों की श्राद्धीय उपादेयता का समर्थन विष्णुधर्मसूत्र एवं विष्णुस्मृति से भी ज्ञात होता है।[58]

इसी प्रकार विभिन्न व्रतों, उपवासों का पालन भी तीर्थों में प्रभूत महत्व रखता था। इस सन्दर्भ में वर्णित है कि गंगा, श्राद्ध, दान, तप एवं व्रत अन्यत्र सुलभ हैं, किन्तु वाराणसी में ये सभी दुर्लभ हैं, अर्थात् यहाँ उनका अक्षय फल प्राप्त होता है।[59] शुक्लतीर्थ में किया गया स्नान, दान, तप, जप एवं उपवास भी महान् फलदायक विवेचित किया गया है।[60] यहाँ शुक्लतीर्थ "अहोरात्र उपवास" पूर्व अर्जित पापों से मुक्ति दिलाता है। इसी प्रकार अयन, चतुर्दशी, संक्रान्ति, अथवा विषुव में संगम पर उपवास एवं नित्य व्रतानुष्ठान करने से ब्रह्महत्या के पाप से मुक्ति मिलती है।[61] चान्द्रायण व्रतों (100) के फल की प्राप्ति तो केवल नर्मदा स्मरण मात्र से बतायी गई है।[62]

भारत की धार्मिक परम्परा में व्रतपालन करते हुए योगयुक्त होकर पुण्य क्षेत्रों एवं तीर्थों में शरीर त्याग करना भी धर्म का एक अंग माना गया था। वाराणसी, प्रयाग, नर्मदा आदि तीर्थों में इस प्रथा का प्रभुत व्यवहार था।[63]

वाराणसी से सम्बन्धित एक प्रथा थी कि मोक्ष को अत्यन्त दुर्लभ तथा संसार को अति भीषण समझ कर पत्थर द्वारा पैरों को तोड़कर मनुष्य वाराणसी में निवास करे।[64] यही आशय मत्स्य एवं अग्निपुराण में भी मिलता है।[65] गंगा-यमुना के संगम पर व्याधिमुक्त, दीन अथवा क्रोधी, प्रयत्नपूर्वक प्राण त्याग करता है, तो वह सूर्य सदृश दीप्त स्वर्ण के वर्ण वाले विमानों से युक्त होकर इच्छित पदार्थ प्राप्त करता है।[66] श्रेष्ठ मुनिजन का कथन है कि देश, विदेश अथवा गृह में प्रयाग का स्मरण करते हुए जो प्राणों का परित्याग करता है, वह ब्रह्मलोक प्राप्त करता है।[67] प्रयाग स्थित वटवृक्ष मूल में प्राणोत्सर्ग करने वाले को रूद्र लोक की प्राप्ति होती है।[68] गंगा-यमुना के संगम पर जल प्रवेश करने वाला सभी पातकों से मुक्त हो जाता है।[69] कूर्मपुराण कहता है कि नर्मदा तीर्थ अग्नि या जल में प्रवेश करने अथवा अनशन कर प्राण त्याग करने वाले मनुष्य को पुनर्जन्म से मुक्ति मिल जाती है।[70] नर्मदा के उद्गम स्थल अमरकंटक पर्वत पर किया गया प्राणत्याग सौ करोड़ वर्षों तक रूद्र लोक में आदर प्रदान करता है।[71] पद्मपुराण में नर्मदा एवं कावेरी के संगम पर अग्नि या उपवास से मर जाने पर मनुष्य पापों को नष्ट करता है एवं मोक्ष दिलाता है।[72]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि इन पवित्र स्थलों या तीर्थों तथा उनसे सम्बन्धित दान, तर्पण, उपवास, प्राणत्याग आदि की पुराणों में विशेष भूमिका एवं महत्ता रही है। पुराणों में इनके बहुविध धार्मिक प्रचलन का संकेत प्राप्त होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *विष्णु स्मृति, सं0 जे0 जॉली, कलकत्ता, 1881.*
अश्वमेधेन शुद्धे युर्ममहापातकिनस्तिस्वमे।
पृथिव्या सर्वतीर्थानाम् तथानुसरणेन च।। 35/6
2. *विष्णुधर्मोत्तरपुराण, वी0पी0, बाम्बे, 1912. 3/273/7 एवं 8*
3. *महाभारत, भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना, 1933-36. वनपर्व, 82/9/12 एवं अनुशासन पर्व, 108/3-4*
4. *ब्रह्मपुराण, क्षेमराज, श्रीकृष्णदास, बम्बई, 1906. 25/4-6*
5. *पद्मपुराण, सं0 हीरालाल सिद्धान्त शास्त्री, श्री वीरसेवा मन्दिर-सस्ती ग्रन्थमाला का आठवाँ पुष्प, विक्रम संवत् 2007. 2/39/56-61*
6. *वायुपुराण, वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, संवत् 1986. 77/125, ब्रह्माण्ड पुराण, 3/13/133*
7. *कूर्मपुराण, प्रो0 आनन्द स्वरूप गुप्त, काशीराम न्यास, रामनगर, वाराणसी, 1972. 2/42/20*
8. *कूर्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 1/अ0 29 से 33 तक; मत्स्यपुराण, अध्याय 180-85; लिंगपुराण, पूर्वार्द्ध, अ0 92; पद्मपुराण 33-37, स्कन्दपुराण, काशीखण्ड, अध्याय 6; नारदीय पुराण (उत्तर), अध्याय 48-51*
9. *कूर्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 1/29/22*
10. *वही, 1/22/40*
11. *वही 1/29/24*
12. *काणे, पी0वी0, धर्मशास्त्र का इतिहास, भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना, 1941. भाग-3 पृ0 1342-43*
13. *स्कन्दपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर, काशीखण्ड, 36/34*
14. *कूर्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 1/29/25*

15. वही, 1/29/42
16. मत्स्यपुराण, सं0 हरिनारायण आप्टे, आनंदाश्रम संस्कृत सीरीज, पूना 1907. कैवल्यं परं यान्तिदेवानामपि दुर्लभम्। 180/59
17. कूर्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 129/45-47
18. वही, 1/29/49
19. महाभारत, पूर्वोद्धृत, वनपर्व, 84/79
20. कूर्मपुराण, 1/30/3; 12, 13, 22; 1/31/16
21. नारदीयपुराण (उत्तरार्द्ध) तत्रापि सर्वतीर्थनामुत्तमा मणिकर्णिका। 49/66
22. स्कन्दपुराण (काशीखण्ड),ततो दशाश्वमेधाख्यं सर्वतीर्थोनिषेवितम्।। 106/110
23. कूर्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 1/34/20
24. वही, 1/34/31
25. मत्स्यपुराण, आनंदाश्रम संस्कृत सीरीज, 108/8
26. कूर्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 1/34/45-46
27. वही, 1/34/44
28. वही, 1/3/44
29. वही, 1/35/4-5
30. वही, 1/35/3
31. पद्मपुराण, पूर्वोद्धृत, गोयाने गोवधादिकम्। 19/27
32. विष्णुधर्मोत्तर, पूर्वोद्धृत, 3/273/11-12
33. विष्णुपुराण, मोतीलाल जालान, गीता प्रेस, गोरखपुर, गौरी वाप्युद्वहेत्कन्यां ..... विधिवद्दक्षिणावता। 3/16/20
34. कूर्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 1/35/12
35. वही, 1/35/18
36. वही, 1/27/6
    दश तीर्थसहस्राणि त्रिंशतेद्यस्तथापराः।
    प्रयागे संस्थितानि स्युरेवमाहुर्मनीषिपः।।
37. कूर्मपुराण, 2/38 से 40 अध्याय तक
38. वही, 2/38/5
39. वही, 2/38/1
40. वही, 2/38/7
41. मत्स्यपुराण, पूर्वोद्धृत, 186/10-11, पद्मपुराण, 13/6-7, कूर्मपुराण, 2/38/7-8
42. विष्णुधर्मसूत्र, सं0 जुलियस जॉली, कलकत्ता, 1881. 85/8
43. विष्णुपुराण, पूर्वोद्धृत, 4/3/12-13
    र्मदायै नमः प्रदर्नर्मदाये नमो निशि।
    मोस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः।।
44. कार्पस इंस्क्रिप्शसनम् इण्डिकेरम, जिल्द 3, पृ0 89
45. कूर्मपुराण, 2 अध्याय, 39 से 40 अध्याय तक,
46. कूर्मपुराण, 2/42/21
47. वही, 2/42/22
48. वही, 2/42/23
49. ब्रह्मपुराण, क्षेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, 1906. तीर्थकल्प, पृ0 9
50. कूर्मपुराण, 2/22/15
51. वही, 2/20/29
52. वायु पुराण, पूर्वोद्धृत, 77/14;.....
    प्राप्यामरकंटकम्..... पितृन्सतर्पयिष्यन्ति श्राद्धे पितृ परायणः।।
53. ब्रह्माण्ड पुराण, क्षेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, 1906. 3/1/15
54. कूर्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 2/20/31
55. वायुपुराण, पूर्वोद्धृत, 77/93 कालांजरे दर्शापायां नैमिषे कुरूजांगले।
    वाराण्स्यांनमगर्यां तु देयं श्राद्ध नित्यतः ।। ब्रह्माण्ड पुराण, 3/13/100-101
56. कूर्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 2/29/55-56
57. वही, 2/29/61
58. विष्णु स्मृति, 85/1; अथ पष्करेष्यवक्षयं श्राद्धम्। विष्णुधर्मसूत्र, 85/66
59. कूर्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 1/29/49
60. वही, 2/39/65
61. वही, 2/39/75-76
62. वही, 2/40/38,
    मनसा संस्मरेद्यस्तु नर्मदा.....।
    चान्द्रायणशतं सागं लभते नात्रा संशयः।।
63. कूर्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 1/29/35
64. अग्निपुराण, 1/2/3, अश्मना चरणाहित्वावसेत्काशी न हित्यजेत्।
65. कूर्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 1/34/31-32
66. कूर्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 1/34/35-36, मत्स्यपुराण, 106/11
67. कूर्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 1/35/8
68. वही, 1/35/15
69. वही, 2/39/21
70. वही, 2/39/32
71. पद्मपुराण, पूर्वोद्धृत, 16/14-15
72. बील, बुद्धिस्ट रेकर्डस आॅफ दि वेस्टर्न वल्ड, जिल्द-2, पृ0 232-34